इकाई - I 3. जो देखकर भी नहीं देखते

SCERT TELANGANA

प्रश्न :

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. इस चित्र को देखकर आपके मन में क्या विचार आ रहे हैं?
3. यदि यह देख नहीं सकती तो उसे कुत्ते को स्पर्श करते समय क्या आभास हो रहा होगा?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ, यह परखने के लिए कि वह क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापस लौटीं। मैंने उनसे पूछा, "आपने क्या-क्या देखा?"

"कुछ खास तो नहीं," उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती हैं, वे बहुत कम देखते हैं।

क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटाभर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज़ न देखे? मुझे–जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता–सैकड़ों रोचक चीज़ें मिलती हैं, जिन्हें मैं छूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान मैं टहनियों में नयी कलियाँ खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती हूँ, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूँजने लगते हैं। अपनी अँगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियाँ या घास का मैदान किसी भी महँगे कालीन से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है।

कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीज़ों को देखने के लिए मचल उठता है। अगर मुझे इन चीज़ों को सिर्फ़ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा। परंतु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग

SCERT TELANGANA

उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज़ की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

यह कितने दुख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज़ समझते हैं, जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।

❑ *हेलेन केलर*

लेखिका के बारे में

हेलेन केलर (1880-1968, अमेरिका) एक ऐसा नाम है जो घोर अंधकार के बीच भी रोशनी देता रहा। कल्पना कीजिए कि जो न सुन सकता हो, न देख सकता हो फिर भी वह लिखना-पढ़ना और बोलना सीख ले, भरपूर आशा-आकांक्षा के साथ जीवन जीने लगे और उसके योगदान दुनिया के लिए यादगार बन जाएँ! ऐसी थीं हेलेन केलर। जब वे डेढ़ वर्ष की थीं, बचपन की एक गंभीर बीमारी की वजह से उनकी देखने और सुनने की शक्ति जाती रही, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। कॉलेज के दिनों में ही प्रकाशित अपनी आत्मकथा 'स्टोरी ऑफ़ लाइफ़' में वे लिखती हैं-"मुझे ये तो याद नहीं कि ऐसा कैसे हुआ, लेकिन ऐसा लगता था कि रात कभी खत्म क्यों नहीं होती और सुबह क्यों नहीं आती।" दुनिया की सभी भाषाओं में इस किताब के अनुवाद हुए हैं। इसके अलावा भी उनकी दस पुस्तकें और सैकड़ों लेख प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने दुनियाभर में घूम-घूमकर अपने जैसे लोगों के अधिकारों और विश्वशांति के लिए काम किया। हेलेन केलर भारत भी आई थीं।

SCERT TELANGANA

सुनिए–बोलिए

1. जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं– हेलन केलर को ऐसा क्यों लगता था?
2. जो लोग आँखों से देख नहीं पाते, वे दूसरों के द्वारा देखी गयी चीज़ों की प्रशंसा सुनकर क्या सोचते होंगे?
3. अगर आपकी कक्षा में ऐसा बच्चा दाख़िला ले जिसे दिखायी न देता हो, तो आप उसके लिए विद्यालय में क्या–क्या व्यवस्था करवाना चाहेंगे?

पढ़िए

1. हेलन केलर वसंत के दौरान टहनियों में क्या खोजती थीं?
2. हेलन केलर की सहेली कहाँ से लौटी थी?
3. हेलन केलर किस पेड़ की चिकनी छाल छूकर पहचान लेती थीं?
4. हेलन केलर किस पेड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती थीं?
5. मनुष्य हमेशा किन चीज़ों की आस लगाये रहता है?

लिखिए

1. 'प्रकृति का जादू' से क्या तात्पर्य है ?
2. "जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा–भरा किया जा सकता है।"- आपकी दृष्टि से इस पंक्ति का क्या अर्थ हो सकता है?
3. कान से न सुन पाने पर आस–पास की दुनिया कैसी लगती होगी?

शब्द भंडार

1. हम अपनी पाँचों इंद्रियों में से आँखों का प्रयोग सबसे अधिक करते हैं। ऐसी चीज़ों के अहसासों की तालिका बनाइए जो तुम बाकी चार इंद्रियों से महसूस करते हो।

सुनकर	चखकर	सूँघकर	छूकर

SCERT TELANGANA

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. हेलन केलर का एकल अभिनय पट लिखकर अभिनय कीजिए।

प्रशंसा

1. बस में जाते समय यदि तुम बैठे हुए हो और कोई बूढ़ा आदमी खड़ा है–
   (क) बगल में जगह दूँगा। (ख) खड़े होकर अपने स्थान पर बैठाऊँगा। (ग) ध्यान नहीं दूँगा
2. तुम्हारे द्वारा भाग लिए किसी प्रतियोगिता में यदि तुमसे कोई अच्छा गाता है तो–
   (क) निंदा करूँगा (ख) प्रशंसा करूँगा (ग) प्रतिक्रिया नहीं करूँगा
3. यदि तुम्हारी कक्षा में कोई नया छात्र या छात्रा आये तो –
   (क) मैं ही पहले बात करूँगा (ख) दूर रहूँगा (ग) आवश्यक सहायता करूँगा
4. विशेष आवश्यकता वाले बालकों के प्रति –
   (क) दया दिखाऊँगा (ख) दूर रहूँगा (ग) सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करूँगा
5. दूसरी भाषाओं से मुझे.........है।
   (क) भय (ख) नापसंद (ग) रूचि

भाषा की बात

1. पाठ में स्पर्श से संबंधित कई शब्द आए हैं। नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। बताइए कि किन चीज़ों का स्पर्श ऐसा होता है–

चिकना	....	चिपचिपा	....
मुलायम	....	खुरदरा	....
सख्त	....	भुरभुरा	....

2. अगर मुझे इन चीज़ों को छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा।
   - ऊपर रेखांकित संज्ञाएँ क्रमशः किसी भाव और किसी की विशेषता के बारे में बता रही हैं। ऐसी संज्ञाएँ भाववाचक कहलाती हैं। गुण और भाव के अलावा भाववाचक संज्ञाओं का संबंध किसी की दशा और किसी कार्य से भी होता है। भाववाचक संज्ञा की पहचान यह है कि इससे जुड़े शब्दों को हम सिर्फ़ महसूस कर सकते हैं, देख या छू नहीं सकते। आगे लिखी भाववाचक संज्ञाओं को पढ़िए और समझिए। इनमें से कुछ शब्द संज्ञा और कुछ क्रिया से बने हैं। उन्हें भी पहचानकर लिखिए।

SCERT TELANGANA

परियोजना कार्य

1. किसी एक **विशेष आवश्यकता वाली** महिला या पुरुष के बारे में जानकारी एकत्र करके लिखिए, **जिसने दुनिया में** अपना नाम और देश का नाम प्रसिद्ध **किया है** ।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ।		
2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ।		
3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ।		
4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		
5. पाठ के आधार पर प्रकृति वर्णन कर सकता/सकती हूँ।		

सुनहरे वचन

मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज़ की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

SCERT TELANGANA